International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 4, April- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

पुष्टिमार्गीय रागसेवा और उसके पुरोधा कीर्तनकार पंडित ढुंढ महाराज

डॉ. श्रुति गोस्वामी, विषय- संगीत (गायन)

राजकीय महारानी सुदर्शन कन्या महाविद्यालय, बीकानेर

सारांश-

16 वी शताब्दी में महाप्रभु वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैत सिद्धान्त की प्रतिष्ठा और भगवत् अनुग्रह से प्राप्त होने वाली भक्ति के मार्ग की स्थापना की थी, जिसे पुष्टिमार्ग कहा जाता है। इसमें 'राग' को भी 'भोग' और 'श्रृंगार' के साथ प्रभु सेवा के एक अंग के रूप में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया था। महाप्रभु वल्लभाचार्य के द्वारा स्थापित और उनके पुत्र विठ्ठलनाथ गुंसाई जी के द्वारा व्यवस्थित पुष्टिमार्गीय रागसेवा, जिसे 'कीर्तन' और 'हवेली संगीत' के रूप में भी जाना जाता है, के लिए नियुक्त प्रमुख कीर्तनकार और 'अष्टछाप कवियों के रूप में प्रसिद्ध सूरदास, कुंभनदास, परमानन्द दास, कृष्णदास, नन्ददास, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास और गोविन्द स्वामी में से अधिकांश न केवल महान भक्ति कवि थे अपितु श्रेष्ठ संगीतकार भी थे। इन भक्त कवि कीर्तनकारों के द्वारा पोषित यह कीर्तन परंपरा आज पुष्टिमार्ग के मंदिरों में लगभग अविच्छिन्न रूप से चल रही है। संगीत और साहित्य के अद्वितीय संतुलन की यह परंपरा संप्रदाय की प्रमुख सात पीठों के साथ-साथ देश के विभिन्न पुष्टिमार्गीय मंदिरों में जीवित है, जिनमें राजस्थान की पांच पीठो के अलावा बीकानेर को भी पिछली अनेक शताब्दियों से इसका संरक्षण करने सौभाग्य मिला है, जहां के प्रमुख कीर्तनकारों में पंडित ढुंढ महाराज की सेवाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय है क्योंकि वे न केवल एक श्रेष्ठ और अग्रणी कीर्तनकार थे अपितु उन्होंने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा विधिवत् प्राप्त की थी। वे एक योग्य संगीत गुरु थे, आकाशवाणी कलाकार थे और रचनाकार भी थे।

संगीत हमारी संस्कृति का एक प्रमुख अंग हैं और इसकी विभिन्न विधाओं का तथा उनका पोषण करने वाले विशिष्ट कलाकारों का प्रोत्साहन और संरक्षण करना समाज का दायित्व है । संगीत की विशिष्ट विधाओं में पुष्टिमार्गीय कीर्तन एक ऐसी शैली है जो सार्वजनिक न होने के कारण संगीत के क्षेत्र में हमारी दृष्टि से अपेक्षित महत्व प्राप्त नहीं कर पायी है और आशंका है कि राग सेवा में रत विशिष्ट संगीतज्ञ कीर्तनकारों के साथ-साथ इस विशिष्ट परम्परा का कहीं लोप न हो जाये और पं. ढुंढ महाराज जैसे अनेक श्रेष्ठ कीर्तनकारों की उपलब्धियों से लाभान्वित होने से समाज वंचित न रह जाये ।

प्रस्तुत शोध हिंदुस्तानी संगीत की ऐसी श्रेष्ठ परम्परा और उसका पोषण करने वाले कलाकारों की उपलब्धियों का समाज को लाभ पहुंचाने और संस्कृति का संरक्षण करने के पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया गया है ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 4, April- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

पुष्टिमार्गीय राग- सेवा का सांगीतिक पक्ष और परंपरा-

अष्टछाप और उसके पश्चात् का समय हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के इतिहास में ध्रुवपद शैली के उत्थान का और उसकी विभिन्न बानियों के निर्माण का समय था। कवि होने के साथ-साथ श्रेष्ठ संगीतज्ञ होने के कारण अष्टछाप कीर्तनकारों के पदो के संगीत पर तत्समय प्रचलित अन्य शास्त्रीय और लोक संगीत शैलियों का भी प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था, जिसमें धमार और अष्टपदी शैलियां और होरी और रसिया आदि शैलियां प्रमुख हैं। राग सेवा होने के कारण कीर्तन विभिन्न राग-रागणियों में निबद्ध है और ऐसा माना जा सकता है कि विद्यमान पुष्टिमार्गीय कीर्तन गायन का तत्कालीन गायन स्वरूप से परंपरागत संबंध है। इस परंपरा में ये बिन्दु विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं कि इसके पदों में प्रयुक्त साहित्य भाव से अनुप्राणित है और संगीत अथवा राग-रागणियां उसकी पोषक हैं। गायन समय और ऋतुओं के अनुसार किया जाता है, उसमें उपयुक्त तालों और सरल लय एवं लयकारियों का उपयोग होता है। आलापचारी और तानबाजी आदि की चमत्कारिता को महत्व नहीं दिया जाता और संगत वाद्यों की संख्या भी बहुत सीमित रहती है।

पुष्टिमार्ग के अनुसार सांसारिक जीव की रागात्मिका वृत्ति का विनियोजन चूंकि अनन्यतः प्रभु सेवा में ही किया जाना अभीष्ट है इसलिए इस संप्रदाय के मंदिरों में किया जाने वाला कीर्तन सार्वजनिक प्रदर्शन और मनोरंजन की विषयवस्तु न होने के कारण यह उन परिवर्तनों से प्राय अछूता रहा है जो हमारे संगीत और उसकी विभिन्न शैलियों में समय-समय पर हुए हैं और निस्संकोच यह माना जा सकता है कि कला और भावपक्ष की दृष्टि से उसने और हमारे इन परंपरागत कीर्तनकारों ने न केवल हमारे संगीत की परंपरा को अपितु एक ऐसी प्रामाणिक और उत्कृष्ट धरोहर को भी जीवित रखा है जो संगीत की ऐतिहासिक शृंखला की कड़ियाँ जोड़ने में सहायक हो सकती है।

बीकानेर में पुष्टिमार्गीय राग सेवा की परंपरा और पंडित ढुंढ महाराज-

पुष्टिमार्ग अथवा वल्लभ संप्रदाय की प्रमुख सात पीठों में से कोई पीठ यहां न होते हुए भी यहां के अनेक पुष्टिमार्गीय मंदिरों में राग सेवा पिछली अनेक शताब्दियों से नियमित रूप से की जाती रही है। यहां पुष्टिमार्ग के सेव्य स्वरूपों की कीर्तन सेवा का आरंभ महाराज सरदार सिंह के समय में रतनबिहारी जी मंदिर की स्थापना के समय हुआ था। इन मंदिरों में अधिकांशतः गोस्वामी और भट्ट जाति के श्रेष्ठ और परंपरागत कीर्तनकार अपनी सेवाएं देते रहे हैं प्रमुख मंदिरों में दाऊजी, रतनबिहारी जी, मरूनायक जी, मूंधड़ा बगीची, गोवर्द्धन नाथजी, श्यामसुंदर जी, विठ्ठल नाथ जी, मदन मोहन जी और गोपाल जी के मन्दिर हैं। पंडित ढुंढ महाराज बीकानेर के श्रेष्ठ कीर्तनकारों की उस शृंखला की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय कड़ी थे जो चैनधर जी से प्रारंभ होकर वल्लभ जी, गोपाल जी, गोविन्द लाल जी और बूला महाराज तक विद्यमान थी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 4, April- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

पंडित ढुंढ महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय-

पंडित ढुंढ महाराज का जन्म सन् 1914 ईस्वी में बीकानेर के एक संभ्रांत तैलंग ब्राह्मण परिवार में हुआ था और उनका नाम जगतनारायण गोस्वामी रखा गया था। उनके पिता ग्वाललाल स्वयं एक अच्छे कीर्तनकार थे, जिनका देहांत इनकी बाल्यावस्था में ही हो गया था जिसके कारण इनके पालन पोषण का भार इनकी माता श्रीमती मनसुखी देवी पर आ पड़ा, जिन्होंने अपना कर्तव्य बड़े ही धैर्य से निभाया। वे स्वयं पुष्टिमार्ग में दीक्षित थीं और भजन कीर्तन में अत्यंत रूचि रखती थीं। वे एक विदुषी अध्यापिका थीं। पंडित ढुंढ महाराज का विवाह होने के कुछ ही समय पश्चात् उनकी पत्नी का असामयिक निधन हो जाने से इनमें वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया, जिसके कारण इनका संगीत के प्रति विशेष झुकाव हुआ। इन्होंने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विधिवत् शिक्षा सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ पंडित लाभू महाराज से प्राप्त की। शिक्षा के प्रति इनकी प्रारंभ से ही रुचि रही थी और इन्होंने तत्कालीन बिड़ला कॉलेज पिलानी से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की।

इनके जीवन का अधिकांश समय संगीत के वातावरण में और भगवद् भजन में व्यतीत हुआ और अपने सेव्य भगवत्स्वरूप के प्रति इनके मन में कितना अधिक भक्तिभाव था इसका सबसे बड़ा प्रमाण भला इससे अधिक और क्या हो सकता है कि इन्होंने ठाकुर मदनमोहन जी के श्री चरणों का कीर्तन करते-करते ही अंतिम सांस ली थी। इनका देहांत 2 मार्च 1998 को सायं लगभग 6 बजे 85 वर्ष की आयु में हुआ।

पंडित ढुंढ महाराज का पुष्टिमार्गीय कीर्तन परंपरा में प्रशिक्षण और कीर्तनकार के रूप में सेवाएं-

पंडित ढुंढ महाराज की माता ने पुष्टिमार्ग की कामां (भरतपुर) पीठ के पीठाधीश गोस्वामी श्री वल्लभ लाल जी से दीक्षा ली थी इसलिए उन्होंने अपने पुत्र की संगीत शिक्षा और अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए इन्हें पुष्टिमार्गीय राग सेवा की विधिवत् शिक्षा प्राप्त करने के लिए कामां जाने का निर्देश दिया जिसे शिरोधार्य करते हुए इन्होंने वहां जाकर गोकुल चन्द्रमा जी के मंदिर के प्रमुख कीर्तनकार गुरू गोविन्दराम के सान्निध्य में आठ वर्ष तक राग सेवा के विभिन्न पहलुओं का व्यापक और सांगोपांग अध्ययन और अभ्यास किया। कामा के गोकुल चन्द्रमा जी मंदिर में कीर्तन सेवाएं अर्पित करने के अतिरिक्त इन्होंने देश के विभिन्न बड़े शहरों में कीर्तनकार के रूपमें राग सेवा की, जिनमें कलकत्ता, बंबई, दिल्ली, बनारस और बीकानेर भी हैं।

पंडित ढुंढ महाराज राग सेवा परंपरा की विशिष्ट शैली के प्रतिनिधि कीर्तनकार-

पुष्टि संप्रदाय के प्रमुख केन्द्र ब्रजभूमि राजस्थान और गुजरात में हैं और जैसा कि पहले बताया जा चुका है, इस संप्रदाय के मंदिरों में किया जाने वाला कीर्तन सार्वजनिक प्रदर्शन और मनोरंजन की विषयवस्तु न होने के कारण, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और उसकी विभिन्न शैलियों में समय-समय पर हुए परिवर्तनों से प्रायः अछूता रहा है और उसमें गेय पद का ध्रुवत्व और भाव न केवल मूल लय में अपितु प्रयोज्य लयकारियों में भी बनाये रखा जाता है तथापि प्रांतीय दूरियों और कीर्तनकारों की शिक्षा एवं व्यक्तिगत रुचि जैसे कतिपय कारणों से आज कीर्तन गायन हमें मोटे तौर पर दो स्वरूपों में उपलब्ध होता है जिन्हें कुछ-कुछ नायकी और गायकी के रूप में शास्त्रीय संगीत में जानी जाने वाली शैलियों के संदर्भ में समझा जा सकता है अर्थात् इनमें से एक शैली में मूल पद के गायन में शब्दों के बीच के अंतराल में छोटे-छोटे आलापों और अलंकारों का प्रयोग भी पद में निहित भाव के पोषण के लिए किया जाता है।

तथापि ऐसा किये जाने पर भी पद के ध्रुवत्व को कोई हानि नहीं पहुंचती। पंडित ढुंढ महाराज ने भले ही कामा के पुष्टिसंप्रदाय मंदिर के प्रसिद्ध कीर्तन कार गुरू गोविन्द राम के सान्निध्य में आठ वर्ष के लंबे समय तक कीर्तन का अभ्यास और गायन किया था फिर भी उसके पूर्व की अपनी हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा और व्यक्तिगत रुचि के प्रभाव से उन्होंने अपनी कीर्तन गायकी की भावाभिव्यक्ति में उक्त आलापों और अलंकारों से वृद्धि की थी और वे स्वयं को उस विशिष्ट शैली का प्रतिनिधि कीर्तनकार मानते थे।

पंडित ढुंढ महाराज की उल्लेखनीय उपलब्धियां-

१ कीर्तन

पुष्टि संप्रदाय की राग सेवा में पंडित ढुंढ महाराज के द्वारा प्राप्त शिक्षा-दीक्षा को और उनके द्वारा अपने अधिकांश जीवनकाल में की गयी निरंतर और भक्तिपूर्ण कीर्तन सेवा के महत्व को समझते हुए और यह महसूस करते हुए कि कीर्तन गायन की उनकी विशिष्ट शैली की यह परंपरा लुप्त होती जा रही है. उनके सेवकों और शिष्यों ने उनसे कुछ चुनिंदा पुष्टिमार्गीय पदों का ध्वन्यंकन कराने की प्रार्थना की. जिसे उन्होंने कीर्तन परंपरा, संप्रदाय और संगीत जगत के हित में मानते हुए सहर्ष स्वीकार कर लिया और जैसा कि देश के प्रमुख पत्र 'राजस्थान पत्रिका के 14 दिसम्बर, 1996 के थावर अंक बताया गया है 'हवेली संगीत के पुरोधा ढुंढ महाराज की कीर्तन गायकी की 16 कैसेट्स जारी की गयीं जिन्होंने देश-विदेश में वैष्णव संप्रदाय के अष्टछाप के कवियों की रचनाओं को सर्व व्यापी बना दिया। इन कैसेट्स में पहली बार 271 पद (जिनमें से पर्याप्त संख्या में ध्रुवपद और धमार हैं) रिकॉर्ड किये गये जो हवेली संगीत की महत्वपूर्ण धरोहर बन गये हैं।

पंडित ढुंढ महाराज के द्वारा चुने गए इन कीर्तन पदों को 'कीर्तन सेवा कीर्तन कलकत्ता बारह मास के 16 भागों में नामक पुस्तक में मुद्रक, एस्केज शोभाराम बैसाख स्ट्रीट, - 7 के द्वारा छापा गया और श्री माधोदास मूंधड़ा 12/1-बी, लिण्डसे स्ट्रीट, कलकत्ता-87 के द्वारा प्रकाशित किया गया। इसी संबंध में 23 अप्रेल 1992 के 'दैनिक नवज्योति में प्रकाशित और अशोक आत्रेय के द्वारा लिखित सामग्री भी पठनीय है।

पंडित ढुंढ महाराज की सेवाओं का उल्लेख प्रताप सिंह चौधरी द्वारा लिखित पुस्तक राजस्थान; संगीत और संगीतकार में और सादुल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीटूयूट, बीकानेर द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'हिन्दुस्तानी संगीत को बीकानेर का अवदान' में तथा पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक क्षेत्र, उदयपुर की त्रैमासिक पत्रिका 'कला प्रयोजन के अंक 31 में गोस्वामी दिनेश चन्द्र के द्वारा लिखित लेख 'पुष्टिमार्गीय कीर्तन बनाम हवेली संगीत में भी किया गया ।

कार्यक्रम

देश के अग्रणी कीर्तनकार के रूप में इन्हें जयपुर स्थित जवाहर कला केन्द्र में अपनी कीर्तन गायकी का लाभ श्रोताओं को उपलब्ध कराने के लिए वर्ष 1996 में विशेषरूप से आमंत्रित किया गया और इस आमंत्रण को जनहित में मानते हुए इन्होंने अपनी वृद्धावस्था और रुग्णता की स्थिति में भी अपनी प्रभावी प्रस्तुति दी।

इनके कार्यक्रम देश के अनेक प्रमुख स्थानों में हुए थे जिनमें कलकत्ता, बबई बनारस, कामा और बीकानेर आदि हैं।

आकाशवाणी कलाकार

पंडित ढुंढ महाराज आकाशवाणी के साथ इसके जयपुर केन्द्र की स्थापना के समय से ही आकाशवाणी कलाकार के रूप में जुड़े रहे एवं भक्ति संगीत और लोक संगीत कार्यक्रम देते रहे। तत्पश्चात् वे अपने कार्यक्रम बीकानेर आकाशवाणी केन्द्र से देने लगे।

सम्मान

हवेली संगीत में विशिष्ट्य योगदान के लिए पंडित दुढ महाराज को प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया ।उन्हें कलकत्ता में वर्ष 1988 में ओसवाल समाज द्वारा हवेली संगीत के पुरोधा के रूप में सम्मानित किया गया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 4, April- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

पंडित ढुंढ महाराज एक योग्य संगीत गुरु-

यद्यपि पंडित ढुंढ महाराज की विरक्ति और भक्तिभाव ने इन्हें राग सेवा में संलग्न कर दिया था तथापि इनके सांगीतिक पांडित्य और महत्व को समझते हुए शिक्षा विभाग ने इनकी सेवाओं का उपयोग विभाग और विद्यार्थियों के हित में किये जाने की दृष्टि से इनसे संगीत शिक्षक की नियुक्ति स्वीकार करने का अनुरोध किया, जिसे एक पवित्र कार्य समझते हुए इन्होंने संगीत शिक्षक का पद संभाला और निरंतर लगभग 20 वर्ष तक अध्यापन किया। सेवाओं के लिए इन्होंने बी.म्यूज की परीक्षा भी उर्तीण की थी।

इनकी सांगीतिक प्रतिभा और ख्याति के कारण बीकानेर के रियासती काल में इन्हें राजघराने में संगीत शिक्षा देने के लिए नियुक्त किया गया था और वहां भी इन्हें उचित प्रतिष्ठा मिली। अपने राजकीय सेवा काल के दौरान ये विभागीय कार्यक्रमों और सम्मेलनों में आमंत्रित किये जाते थे और अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विशेष छाप छोड़ते थे।

इनके शिष्यों में अनेक शिष्य न केवल आकाशवाणी और मंचीय कलाकार है अपितु आकाशवाणी इत्यादि के परीक्षक मण्डलों में भी रहे हैं।

पं. ढुंढ महाराज का व्यक्तित्व और कृतित्व-

पं. ढुंढ महाराज के पुष्टिमार्गीय राग-सेवा के एक अग्रणी और विशिष्ट शैली के श्रेष्ठ संगीतज्ञ और योग्य संगीत गुरु होने के पीछे उनके प्रतिभाशाली और विलक्षण व्यक्तित्व का विशेष योगदान रहा था। प्रसिद्ध साहित्यकार कवि श्री प्रकाश परिमल ने ढुंढ गुरु को संगीत, भक्ति और वैराग्य का एक ऐसा साधक बताया है जिसने अपने त्याग-तपस्या के कारण बीकानेर से उठकर देश के सुदूरतम क्षेत्रों में अपनी सांगीतिक प्रतिभा की सुगन्ध फैलाई है उनके अनुसार प्रतिभा वह मेघा है जिसमें विलक्षण के चयन की क्षमता होती है। पं. ढुंढ महाराज के व्यक्तित्व की विलक्षणताओं का प्रमाण अनेक प्रसंगों से मिलता है।

भक्ति और वैराग्य-

किसी एक ही व्यक्ति में सामान्यतः विपरीत समझे जाने वाले गुणों-रागऔर विराग का एक साथ होना अपने आप में एक विलक्षणता है। पं. ढुंढ महाराज का जन्म जहां भक्ति संप्रदाय की परंपरा में हुआ था और कालान्तर में उनकी भक्ति भावना का उस परंपरा में संस्करण और सवंर्धन भी हुआ था वहीं शैशवावस्था ही में पिता का देहान्त हो जाने और किशोरावस्था में वैरागी साधुओं की संगति मिलने तथा विवाह के केवल एक-दो वर्षों के ही भीतर पत्नी का भी देहान्त हो जाने के कारण उनमें वैराग्य भाव विकसित हुआ था।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 4, April- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

फक्कड़ और औघड़दानी-

पं ढुंढ महाराज फक्कड़ मिजाज थे, साधुसंतों के बीच उठना-बैठना और समाज में भी निरपेक्ष भाव से रहना उनकी प्रकृति में था। निन्दा और स्तुति दोनों से निरपेक्ष थे सही मायनों में यदि उन्हें संत कहा जाये तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। इसी प्रकार वे औघड़दानी भी थे अर्थात् उनके स्वभाव में दानशीलता अथवा उदारहृदयता सहज रूप में थी। उनके लिए नियमित रूप से तैयार किये जाने वाले विशेष भोजन और मिष्ठान्न एवं प्रसाद को वे अपने मित्रों, विपन्नों और भूखे भिखारियों में बांट दिया करते थे। संगीत कार्यक्रमों में प्राप्त धनराशि और वस्त्राभरण को भी वे अपने पास नहीं रखते थे और किसी भी अन्य व्यक्ति के द्वारा मांगे जाने या पसन्द किये जाने पर उसे निःसंकोच और तत्काल दे दिया करते थे। वे अपरिग्रही थे अर्थात् संगीत, साहित्य और कला के अध्ययन के अभ्यासी होने के बावजूद उन्होंने संगीत वाद्यों और साहित्य का न कभी संग्रह किया और न कोई साहित्य अथवा वाद्य अपने पास अधिक समय तक रखा।

रहन-सहन की विलक्षणता-

पं. ढुंढ महाराज ने वेशभूषा और दुनियावी दिखावे के प्रति कभी भी कोई आग्रह नहीं रखा, वे इस विषय में मनमौजी थे और संत स्वभाव के होने के कारण इस संबंध में वे किसी के दृष्टिकोण की किंचित् भी चिन्ता नहीं करते थे, उनके इस चारित्रिक गुण से सभी परिचित थे, इसलिए लोग उनका आदर करते थे।

भोजन भट्ट-

पं. ढुंढ महाराज की खुराक अच्छी थी. मिठाई में मोहनथाल (बर्फी) और बासोंदी (रबड़ी) उनको बहुत पसन्द थी। अपने पास मिलने आये नवागन्तुक को वे कभी में बिना खिलाये-पिलाये वापस नहीं जाने देते थे। संगीत के क्षेत्र में वे इस कहावत के पक्षधर थे कि जो खाएगा वो ही गाएगा। भांग का सेवन वे आजीवन करते रहे इसे वे एकाग्रता के लिए आवश्यक मानते थे ।

तंत्र-मंत्र-यंत्र-

पं. ढुंढ महाराज तंत्र-मंत्र में भी रूचि और दखल रखते थे। इनके माध्यम से उनके द्वारा उपचार किये जाने के प्रसंग भी है। वे संगीत के संबंध में भी प्रयोग करते रहते थे और विभिन्न प्रकार के वाद्य भी बना लिया करते थे और कुछ ही समय बाद उन्हें किसी दूसरे व्यक्ति को दे दिया करते थे ताकि वह उसके माध्यम से संगीत का अभ्यास करे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 4, April- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

चित्रकार.

पं. ढुंढ महाराज एक अच्छे चित्रकार थे। देवी देवताओं, पशुपक्षियों के चित्र बनाने के अलावा वे संगीत के विभिन्न अंगों और विषयों पर चित्रांकन करते थे। उनकी हस्तलिपि भी बहुत सुन्दर थी।

अभिनेता, संगीत निर्देशक और नाटिका लेखक-

किशोरावस्था में पं. ढुंढ महाराज ने अनेक नाटकों में अभिनय किया था और अच्छे स्तर के पुरस्कार, सम्मान और उपाधियां अर्जित की थीं। कालान्तर में उन्होंने अनेक अवसरों पर संगीत निर्देशन भी किया था और कुछ लघु संगीत नाटिकाएं और गीत-भजन लिखे थे।

प्रेरक और दयालु-

पं ढुंढ महाराज अन्य लोगों को सदैव प्रेरणा दिया करते थे, उनकी प्रेरणा से उनके सम्पर्क में आने वाले अनेक व्यक्ति कलाकार और संगीतज्ञ बन गये। वे दीनदुःखी को देखकर तुरन्त द्रवित हो जाते थे और तत्काल उसकी यथासंभव सहायता कर देते थे या उसकी इच्छा पूरी कर देते थे।

संगीत के प्रचार-प्रसार के पक्षधर-

पं. ढुंढ महाराज संगीत के प्रचार प्रसार के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहे। संगीत की शिक्षा और प्रेरणा देते रहे, संगीत गोष्ठियां कार्यक्रम और सम्मेलन करते रहे और प्रचार-प्रसार के लिए संस्थाओं का संचालन करते रहे। गायन में सन्तुलन, अनुशासन और भावाभिव्यक्ति को वे विशेष महत्त्व देते थे।

स्वाभिमानी, और देशप्रेमी-

पं. ढुंढ महाराज संत स्वभाव के होने के बावजूद आत्मसम्मान के मामले में कोई समझौता नहीं करते थे, जहां उन्हें इस बात का आभास हो जाता था कि कोई व्यक्ति उनकी सज्जनता का उपहास करना चाहता है वहां वे शालीनतापूर्वक उसका प्रतिकार करने से भी नहीं चूकते थे। वे इस परंपरा के व्यक्ति थे, जिन्हें स्वयं के प्रचार प्रसार या प्रशंसा में कोई रुचि नहीं होती है तथापि अपने क्षेत्र या जन्मभूमि के गरिमा के विषय में आक्षेप किये जाने पर उसकी रक्षा के लिए तुरन्त प्रस्तुत हो जाते थे। राष्ट्रहित का वे निरन्तर चिन्तन किया करते थे इसके लिए उन्होंने अपने साहित्य और संगीत के द्वारा तथा विभिन्न कार्यक्रमों में और आकाशवाणी आदि के माध्यम से योगदान किया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 4, April- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

कीर्तन सेवा -

बारह मास के कीर्तन 16 भागों में श्री ढुंढ महाराज (संकलन एवं गायन)

संगीत साधना- ढुंढ महाराज गोस्वामी

बालकों के सामाजिक गीत - ढुंढ महाराज गोस्वामी

संगीत पारंगत- ढुंढ महाराज गोस्वामी

श्री राम रामायण- ढुंढ महाराज गोस्वामी

प्रस्तुत शोध भारतीय संगीत की एक विशिष्ट परम्परा और श्रेष्ठ कलासाधकों के प्रोत्साहन और संरक्षण के उदेश्य से किया गया है। इसके माध्यम से एक अल्पज्ञात परम्परा की विशिष्टताओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए एक अग्रणी कलासाधक के विषय में व्यापक जानकारी उपलब्ध कराने का प्रयत्न किया गया है। इस सम्बन्ध में यथासंभव उपलब्ध साहित्य का अध्ययन, विद्वानों, संस्थाओं, संप्रदाय के पीठाधीशों और आचार्यों से दिशानिर्देश तथा सहायता प्राप्त की।

संदर्भ-

पुष्टिप्रवाह मर्यादाभेद- महाप्रभु वल्लभाचार्य

सिद्धांत मुक्तावली- महाप्रभु वल्लभाचार्य

प्रवेशिका - गोस्वामी शरद अनिरुद्ध लाल जी

पुष्टिमार्गीय कीर्तन संग्रह भाग एक से चार- वैष्णव मित्र मण्डल

कीर्तन पुष्पवाटिका - श्री सुबोधिनी प्रकाशन मण्डल, जोधपुर

पुष्टि संगीत प्रकाश- भगवती प्रसाद प्रेमशंकर भट्ट

कीर्तन सेवा -

बारह मास के कीर्तन 16 भागों में श्री ढुंढ महाराज (संकलन एवं गायन)

संगीत साधना- ढुंढ महाराज गोस्वामी

बालकों के सामाजिक गीत - ढुंढ महाराज गोस्वामी

संगीत पारंगत- ढुंढ महाराज गोस्वामी

श्री राम रामायण- ढुंढ महाराज गोस्वामी

राजस्थान - संगीत और संगीतकार- प्रताप सिंह चौधरी